नंद घर: भारत की आंगनबाड़ियों की नई परिकल्पना हो रही साकार

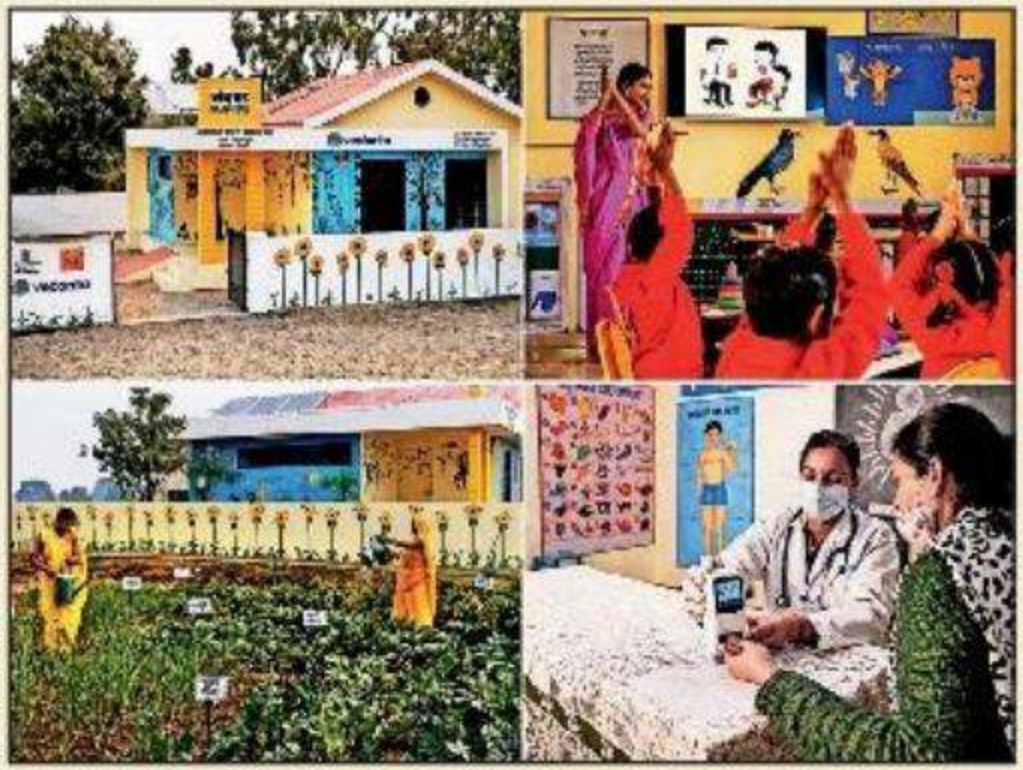

'भारत का भविष्य उसके गावों में तय होगा। अगर हर बच्चे को मजबूत शुरुआत मिले और हर महिला को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले, तो हमारे देश को कोई नही रोक सकता' ऐसा कहना है अनिल अग्रवाल का। यही सोच वेदांता के नंद घर पहल के माध्यम से साकार हो रही है।

आंगनबाड़ियों के आधुनिकीकरण से शुरू हुई यह पहल आज एक समग्र मॉडल बन चुकी है, जो बच्चों के पोषण, प्रारंभिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और महिलाओं के सशक्तीकरण को एक साथ जोड़ती है और पोषण 2.0 जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप है। 17 राज्यों में करीब 13,000 नंद घर स्थापित हो चुके है, जिनका लक्ष्य 8 करोड़ बच्चों और 2 करोड़ महिलाओं तक पहुंच बनाना है; नवंबर 2025 में 10,000 केंद्रों का आंकड़ा पार किया गया।

जमीनी स्तर पर असर स्पष्ट है। वाराणसी में गंभीर कुपोषण से जूझ रहे बच्चों में निगरानी और पोषण सहायता से सुधार हुआ है, जबकि समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करती है कि कोई बच्चा पीछे न रह जाए। झारखंड में नेत्र शिविरों से कई लोगों की दृष्टि लौटी है और राजस्थान में 20+ स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आजीविका व आत्मविश्वास दे रहे है। रोज़ 50,000+ बच्चों को न्यूट्रीबार, यूनिसेफ और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के साथ सहयोग, तथा एनडीडीबी के साथ पोषण माह 2025 के दौरान "शिशु संजीवनी" वितरण ने इसे मजबूत किया है। नीति आयोग की मान्यता के साथ, यह मॉडल स्थायी बदलाव का उदाहरण बन रहा है।